

# तोप

भावार्थ :

व्याख्या

कम्पनी बाग के मुहाने पर  
धर रखी गई है यह 1857 की तोप  
इसकी होती है बड़ी सम्हाल  
विरासत में मिले  
कम्पनी बाग की तरह  
साल में चमकायी जाती है दो बार

प्रस्तुत कविता में कवि वीरेन डंगवाल ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के युद्ध में अंग्रेजों द्वारा इस्तेमाल की हुई तोप का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि यह तोप आज कम्पनी बाग के प्रवेश द्वार रखी हुई है। जिस तरह कम्पनी बाग हमें अंग्रेजों द्वारा विरासत में मिली थी उसी तरह यह तोप भी हमें अंग्रेजों से ही प्राप्त हुआ जिसे आजकल बहुत देखभाल से रखा जाता है। कम्पनी बाग की तरह इसे भी साल में दो बार चमकाया जाता है।

सुबह-शाम कम्पनी बाग में आते हैं बहुत से सैलानी  
उन्हें बताती है यह तोप  
कि मैं बड़ी जबर  
उड़ा दिये थे मैंने  
अच्छे-अच्छे सूरमाओं के छज्जे  
अपने ज़माने में

सुबह-शाम को बहुत सारे यात्री कम्पनी बाग में घूमने आते हैं तब यह तोप अपने बारे में बताती है की मैं बड़ी ताकतवर थी। उस समय मैंने बहुत सारे वीरों के मारा था। बहुत अत्याचार किये थे।

**अब तो बहरहाल**

**छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फारिग हो**

**तो उसके ऊपर बैठकर**

**चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप**

**कभी-कभी शैतानी में वे इसके भीतर भी घुस जाती हैं**

**खासकर गौरैयें**

**वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप**

**एक दिन तो होना ही है उनका मुँह बन्द !**

परन्तु अब तोप की स्थिति बहुत बुरी है छोटे बच्चे इसपर बैठकर घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। जब तोप बच्चों से मुक्त हो जाती है तब चिड़ियाँ इसपर बैठकर आपस में गप्प करती हैं। कभी-कभी चिड़ियाँ खास तौर पर गौरैये तोप के भीतर घुस जाती हैं। इस दृश्य से कवि को ऐसा महसूस होता है मानो वह कह रही हों कोई कितना भी अत्याचारी और क्रूर हो उसका अंत एक न एक दिन जरूर होना है।

**कवि परिचय**

**वीरेन डंगवाल**

इनका जन्म 5 अगस्त 1947 को उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल जिले के कृतिनगर में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा नैनीताल में और उच्च शिक्षा इलाहाबाद में हुई। इन्होंने ऐसी बहुत सी चीज़ों और जीव-जंतुओं को अपनी कविता को आधार बनाया।

**प्रमुख कार्य**

कविता संग्रह – इसी दुनिया में और दुष्चक्र में स्रष्टा।

पुरस्कार – श्रीकांत वर्मा पुरस्कार, साहित्य अकादेमी पुरस्कार।

**कठिन शब्दों के अर्थ**

- मुहाने पर – प्रवेश द्वार पर
- सम्हाल – देखभाल
- विरासत – पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति
- सैलानी – यात्री
- जबर – शक्तिशाली
- सूरमाओं – वीरों
- फ़ारिग – मुक्त
- धज्जे – नष्ट-भ्रष्ट करना
- कंपनी बाग़ – गुलाम भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा जगह-जगह बनवाए गए बाग़-बगीचों में से कानपुर में बनवाया गया एक बाग़

**प्रश्नोत्तरी :**

**प्रश्न अभ्यास**

**(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –**

**1. विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल क्यों होती है? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर** विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी सँभाल इसलिए होती है क्योंकि ये वस्तुएँ हमें अपने पूर्वजों की, अपने इतिहास की याद दिलाती हैं। इनसे हमारा भावनात्मक संबंध होता है। इसलिए इन्हें अमूल्य माना जाता है। ये तात्कालिक परिस्थितियों की जानकारी के साथ दिशानिर्देश भी देती हैं।

**2. इस कविता से तोप के विषय में क्या जानकारी मिलती है?**

**उत्तर** इस कविता में तोप के विषय में जानकारी मिलती है कि यह अंग्रेज़ों के समय की तोप है। 1857 में इसका प्रयोग शक्तिशाली हथियार के रूप में किया गया था। इसने अनगिनत शूरवीरों, स्वतंत्रता सेनानियों के धज्जे उड़ा दिए थे। लेकिन आज यह तोप शांत है और एक बाग़ में निष्क्रिय खड़ी है। अब यह केवल दर्शनीय वस्तु है। चिड़िया इस पर अपना घोंसला बना रही है तथा बच्चे खेल रहे हैं।

### **3. कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?**

**उत्तर** कंपनी बाग में रखी तोप हमें सिख देती है की कोई भी कितना ही ताकतवर क्यों न हो लेकिन एक दिन उसे शांत होना पड़ता है। इसके अलावा यह हमें अंग्रेजों के शोषण और अत्याचारों की याद दिलाती है और बतलाती है की सुरक्षा और हितों के प्रति सचेत रहें। यह हमारे उन तमाम शहीद स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने तथा उनके उनके बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

### **4.कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?**

**उत्तर** भारत की स्वतंत्रता के प्रतीक चिह्न दो बड़े त्योहार 15 अगस्त और 26 जनवरी गणतंत्र दिवस है। इन दोनों अवसरों पर तोप को चमकाकर कंपनी बाग को सजाया जाता है।

**(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए –**

#### **1. अब तो बहरहाल**

**छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फ़ारिग हो**

**तो उसके ऊपर बैठकर**

**चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप।**

**उत्तर** इन पंक्तियों में कवि ने तोप की वर्तमान स्थिति को बताया है। 1857 की क्रांति में जिस तोप ने आतंक मचा रखा था वो आज बेबस थी। छोटे-छोटे बच्चे इसकी नाल पर बैठकर घुड़सवारी करते हैं। चिड़ियाँ भी इसपर बैठकर आपस में बातचीत करती हैं।

#### **2. वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।**

**उत्तर** आज कंपनी बाग का तोप विनाश करने लायक नहीं है। चिड़ियाँ और गौरये उसपर बैठकर फुदकती रहती हैं। इससे यह पता चलता है कि कोई भी कितना भी मजबूत और क्रूर क्यों न हो एक दिन उसे झुकना पड़ता है।

#### **3. उड़ा दिए थे मैंने**

**अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे।**

**उत्तर** इन पंक्तियों में तोप ने अपनी गाथा को सुनाया है। वह बता रहा है की 1857 की क्रांति की सामने उसने अपने आगे किसी की नहीं सुनी थी। उसने कई वीरों की नींद सुला दिया था।

### **कविता का सार**

‘तोप’ कविता ‘वीरेन डंगवाल’ द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ब्रिटिश शासन द्वारा बनाए गए कंपनी बाग के मुहाने पर रखी गई तोप के विषय में बता रहे हैं। यह तोप सन 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की है। उस समय यह तोप शक्तिशाली थी। इस तोप ने अनेक शूरवीरों को मौत की नींद सुला दिया, परंतु अब यह प्रदर्शन की वस्तु बनकर रह गई है। 15 अगस्त और 26 जनवरी के दिन इस तोप को चमकाया जाता है। इसे देखने के लिए अनेक यात्री आते हैं। उन यात्रियों को तोप यह बताती है कि एक समय था, जब मैं अत्यंत सामर्थ्यवान थी, पर नियति के कारण आज मैं शांत खड़ी हूँ। मुझ पर छोटे बच्चे घुड़सवारी करते हैं। चिड़ियाँ मुझ पर बैठकर गपशप करती हैं। गौरैया मेरे अंदर तक घुस जाती हैं, क्योंकि आज मैं डर की वस्तु नहीं हूँ। इसी प्रकार अत्याचारी को भी एक दिन शांत होना पड़ता है। कभी न कभी उसके अत्याचार का अंत शरू होता है। इस प्रकार तोप अत्याचारी व्यक्ति का प्रतीक बन गई है।

### **कविता की व्याख्या**

1.

कंपनी बाग के मुहाने पर

धर रखी गई है यह 1857 की तोप

इसकी होती है बड़ी सम्हाल, विरासत में मिले

कंपनी बाग की तरह

साल में चमकाई जाती है दो बार।

सुबह-शाम कंपनी बाग में आते हैं बहुत से सैलानी

उन्हें बताती है यह तोप

कि मैं बड़ी जबर

उड़ा दिए थे मैंने  
अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे  
अपने ज़माने में  
अब तो बहरहाल  
छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फारिग हो  
तो उसके उपर बैठकर  
चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप  
कभी-कभी शैतानी में वे इसके भीतर भी घुस जाती हैं  
खास कर गौरयें  
वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप  
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

**शब्दार्थ:** मुहाने पर = प्रवेश द्वार पर, धर = रख-रखी गई, सम्हाल = देखभाल,  
विरासत = पूर्वजों से प्राप्त संपत्ति या वस्तुएँ, सैलानी = यात्री, जबर = शक्तिशाली,  
सूरमाओं = वीरों, ज़माने = समय, युग, फ़ारिग = मुक्त, अकसर = हमेशा, धज्जे =  
नष्ट-भ्रष्ट करना, कंपनी बाग = गुलाम भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा जगह-  
जगह पर बनवाए गए बाग-बगीचों में से कानपुर में बनवाया गया एक बाग।

**व्याख्या:** कवि कहते हैं कि कुपनी बाग के प्रवेश द्वार पर 1857 के स्वतंत्रता संग्राम  
में प्रयोग में लाई गई तोप रखी हुई है। कुपनी बाग हमें अंग्रेजों से विरासत के रूप में  
प्राप्त हुआ था। उसी प्रकार यह तोप भी हमें विरासत के रूप में प्राप्त हुई है। इस तोप  
को अत्यधिक देखभाल के साथ रखा गया है। जिस प्रकार कुपनी बाग को चमकाया  
जाता है अर्थात् उसकी सफाई का ध्यान रखा जाता है, उसी प्रकार साल में दो बार इस  
तोप को भी चमकाया जाता है। सुबह-शाम सैलानी कुपनी बाग में भ्रमण करने आते  
हैं। यह तोप उन सैलानियों को अपना परिचय देते हुए कहती है कि मैं बड़ी शक्तिशाली  
हूँ। मैंने अच्छे-अच्छे शूरवीरों की धज्जियाँ उड़ा दीं। उस समय मैंने युद्धक्षेत्र में अनेक  
वीरों को मौत के घाट उतार दिया था। अब तो मैं दुखी हालत में खड़ी हूँ। अब मुझ पर  
छोटे-छोटे बच्चे घुड़सवारी का खेल खेलते हैं। जब वे मुझ पर खेलकर उतर जाते हैं,

तब चिड़ियाँ मुझ पर आकर बैठ जाती हैं और आपस में गपशप करती हैं। जब कभी उनके मन में शैतानी करने का ख्याल आ जाता है, तब वे तोप के अंदर घुस जाती हैं, खासकर गोरैये। तोप आगे कहती है कि कोई कितना ही बड़ा तथा शक्तिशाली क्यों न हो, परंतु एक दिन तो उसका मुँह अवश्य बंद हो जाता है जैसे आज वह चुपचाप खड़ी है।

भाव यह है कि अत्याचार की भी एक सीमा होती है। एक न एक दिन तो अत्याचारी को अपना अत्याचार बंद करना ही पड़ता है।

### **काव्य-सौंदर्य:**

#### **भाव पक्ष:**

1. कवि के अनुसार अत्याचारी को कभी न कभी तो शांत होना ही पड़ता है।
2. शक्तिशाली का अंत भी एक न एक दिन शरूर होता है।

#### **कला पक्ष:**

1. भाषा सहज सरल है।
2. भाषा भावाभिव्यक्ति में सक्षम है।
3. अच्छे-अच्छे, कभी-कभी में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
4. छंद मुक्त कविता है।
5. चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।